नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

रेवड़ी कल्चर पर लगाम जरूरी

भारत की संघीय व्यवस्था में राज्यों की वित्तीय स्थिति केवल लेखा-जोखा भर नहीं है, बल्कि यह विकास की गति, सामाजिक स्थिरता और राजनीतिक परिपक्वता का भी आईना है. वर्ष 2025-26 के बजट अनुमानों और रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) की स्टेट फाइनेंस ; ए स्टडी ऑफ़ बजेट्स रिपोर्ट यह स्पष्ट संकेत देती है कि राज्यों की वित्तीय सेहत एक जटिल मोड़ पर खड़ी है.

आरबीआई के अनुसार, वर्ष 2024-25 में राज्यों का सकल राजकोषीय घाटा (जीएफडी) सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का लगभग 3.1फीसदी रहा, जबकि 2025-26 के लिए इसे 2.8-3.0 फीसदी के बीच रखने का लक्ष्य है. यह आंकड़ा सतही तौर पर संतोषजनक दिखता है, लेकिन इसके भीतर छिपी असमानताएं चिंता पैदा करती हैं. कुछ राज्य जैसे महाराष्ट्र, गुजरात और कर्नाटक जहां पूंजीगत व्यय बढ़ाकर दीर्घकालिक विकास की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, वहीं कई राज्य लोकलुभावन योजनाओं के बोझ से जूझते दिखाई देते हैं.

एक बड़ा प्रश्न राजस्व बनाम व्यय संरचना का है. राज्यों की कुल आय में जीएसटी का हिस्सा 30-35 फीसदी तक है, लेकिन जीएसटी क्षतिपूर्ति समाप्त होने के बाद कई राज्यों की राजस्व वृद्धि धीमी हुई है. इसके परिणामस्वरूप, वे उधारी पर अधिक निर्भर होते जा रहे हैं. आरबीआई के आंकड़े बताते हैं कि राज्यों का कुल कर्ज जीडीपी का लगभग 31 फीसदी है. यद्यपि यह स्तर अंतरराष्ट्रीय मानकों के लिहाज से असहज नहीं है, लेकिन यदि कर्ज का बड़ा हिस्सा वेतन, पेंशन और सब्सिडी जैसे राजस्व व्यय में जा रहा हो, तो यह भविष्य के लिए खतरे की घंटी है. लोकलुभावन योजनाओं की राजनीति इस बहस के केंद्र में है. मुफ्त बिजली, मुफ्त परिवहन, नकद हस्तांतरण और कृषि सब्सिडी जैसी योजनाएं अल्पकाल में सामाजिक राहत देती हैं, लेकिन दीर्घकाल में राजकोषीय दबाव बढ़ाती हैं. उदाहरण के तौर पर, कुछ राज्यों में राजस्व व्यय का 20-25 फीसदी केवल सब्सिडी और मुफ्त योजनाओं पर खर्च हो रहा है. सवाल यह नहीं है कि कल्याणकारी योजनाएं हों या नहीं, बल्कि यह है कि क्या उनके लिए स्थायी वित्तीय स्रोत मौजूद हैं.

सकारात्मक पहलू यह है कि कई राज्यों ने हाल के वर्षों में पूंजीगत व्यय में 15-18 फीसदी की औसत वृद्धि दर्ज की है. सड़क, बिजली, जल आपूर्ति और शहरी अवसंरचना में निवेश से 'क्राउडिंग-इन' प्रभाव पैदा हो रहा है, जिससे निजी निवेश को प्रोत्साहन मिल सकता है. केंद्र सरकार द्वारा विशेष सहायता और ब्याज मुक्त ऋण भी इस दिशा में सहायक रहे हैं. बहरहाल,आगे की राह दरअसल,संतुलन की मांग करती है. राज्यों को तीन मोर्चों पर एकसाथ काम करना होगा. पहला, राजस्व आधार का विस्तार, जिसमें संपत्ति कर, उपयोगकर्ता शुल्क और गैर-कर राजस्व की भूमिका बढ़े. दूसरा, व्यय की गुणवत्ता, जहां मुफ्त योजनाओं की जगह लक्षित और परिणाम आधारित खर्च को प्राथमिकता दी जाए. तीसरा, राजकोषीय पारदर्शिता, ताकि बजट के बाहर के कर्ज और गारंटियों पर स्पष्ट निगरानी हो. कुल मिलाकर राज्यों की वित्तीय सेहत न तो पूरी तरह संकट में है और न ही निश्चिंतता के क्षेत्र में. यह एक ऐसा संक्रमण काल है, जहां विवेकपूर्ण नीति, आंकड़ों पर आधारित निर्णय और राजनीतिक संयम ही भारत के संघीय ढांचे को दीर्घकालिक मजबूती दे सकते हैं.

पीएम मोदी और शाह की चुनावी जीत जोड़ी

दिलीप झा

> वर्ष 2026 भारतीय राजनीति के दृष्टिकोण से बेहद अहम साबित होगा क्योंकि इस साल चार राज्यों -पश्चिम बंगाल, असम, तमिलनाडु, केरल तथा केंद्र शासित प्रदेश पुदुचेरी में विधानसभा चुनाव होने जा रहे हैं. इनमें से तीन में आइएनडी आइए के घटक दलों की सरकार है, जबकि दो में भाजपानीत एनडीए सत्ता में है. पिछले चुनाव में ममता की तृणमूल कांग्रेस को 48 और भाजपा को 38 प्रतिशत मत मिले थे. अब देखना ये होगा कि आगामी चुनाव में दस फीसदी के फासले को पाटने में मोदी शाह की रणनीति कितनी कारगर होती है. क्योंकि यह कहने में कोई गुरेज नहीं कि बंगाल में कांग्रेस और वाम मोर्चा बिल्कुल हाशिये पर है और बीजेपी के लिए सुनहरा अवसर है जबकि तीन कार्यकाल के बाद ममता के खिलाफ सत्ता विरोधी लहर स्वाभाविक है. वहीं, बंगाल के लाखों लोगों और बीजेपी के कार्यकर्ताओं का कहना है कि राष्ट्रपति शासन लगाकर चुनाव हो तो बीजेपी बंगाल फतह कर सकती क्योंकि वह जीत के दहलीज पर खड़ी है. इसके पीछे लोग तर्क दे रहे हैं चुनाव के समय बांग्लादेश से हजारों अवैध घुसपैठियों का प्रवेश होता है और फिर खुल्लम खुल्ला लालू राज के स्टाइल में जबरन वोट डाले जाते हैं और जिस क्षेत्र से टीएमसी को वोट नहीं मिले वहां आगजनी की घटना को अंजाम दिया गया था. पिछले चुनाव के दौरान भी बंगाल के कई जिलों से घरों में आग लगाने की भयानक खौफनाक की तस्वीरें सामने आई थीं.

आजाद भारत के इतिहास में सरदार वल्लभ भाई पटेल के बाद देश को पहली बार एक ताकतवर गृहमंत्री के रूप में अमित शाह मिले हैं जो राजनीति के चाणक्य माने जाते हैं. देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने और आतंकवाद पर नकेल कसने में कामयाब अमित शाह ने भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं में जबरदस्त उत्साह भर दिया है. उनकी कार्यशैली की सबसे बड़ी विशेषता है चुनौतियों से निपटने की कारगर रणनीति. किसी भी विषय परिस्थितियों में वह विचलित नहीं होते हैं.

पहली बार जब उन्हें भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष की कमान मिली तो उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि उनकी सांगठनिक क्षमता अद्भुत है और कार्यकर्ताओं की दूरदर्शिता को परखने में उन्हें महारत हासिल है. वह इस बात से भलीभांति परिचित हैं कि भाजपा के सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों के कार्यकर्ता भी जी जान से पार्टी के लिए कितना समर्पित हैं. वर्ष 2025 के बिहार विधानसभा चुनाव की जीत की पटकथा उन्होंने दो तीन बिहार दौरे के बाद ही लिख दी थी. वहां के मीडिया कर्मियों और प्रबुद्ध लोगों को नपी तुली भाषा में जवाब देकर अमित शाह ने उन्हें संतुष्ट कर दिया कि बिहार में अब सिर्फ और सिर्फ विकास की बात होगी. उन्होंने बिहार के लोगों को यह अहसास कराया कि जात-पात के दंश को भूलकर बिहार की युवा पीढ़ी अब बहुत आगे निकल चुकी है और पुन: वे इस दलदल में फंसने के लिए कतई तैयार नहीं है. शाह और प्रधानमंत्री मोदी के कथन में वो आवाज होती है जो जनता चाहती है और यह तभी संभव होता है जब आप जनता से जुड़े होते हैं और उनकी नब्ज को समझने में महारत हासिल हो.

दरअसल अमित शाह ने बिहार के समग्र विकास का ऐसा खाका तैयार किया जो वहां के लोगों के दिलो-दिमाग में फिट बैठ गया. तकरीबन 15 साल लोगों ने लालू प्रसाद यादव के जंगल राज को देखा था और वे पुन: उसकी परछाईं से भी डरते थे. अमित शाह अपने वादों की प्रतिबद्धता से लोगों का दिल जीतने में सफल साबित हुए और ऐतिहासिक जीत हासिल कर बिहार में एनडीए की सरकार बनाई. दरअसल पिछले तीन दशकों से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमित शाह की जोड़ी ने बीजेपी की राजनीति को एक नया आयाम दिया है. इस जोड़ी ने पिछले 11 वर्षों में भाजपा को जीत के शिखर पर पहुंचा दिया है.

अमित शाह ने अपनी बुद्धिमत्ता से सामाजिक सौहार्द और समरता बिगाड़ने वालों को भी दो टूक कहा है कि देश विकासवादी सोच के साथ चलेगा. नफरत और हिंसा फैलाने वाले सावधान हो जाएं. 2024 के लोकसभा चुनाव में कतिपय कारणों से जब भाजपा 240 सीटों पर सिमट गई तो देश की जनता भी अचंभित हो गई थी कि बहुमत से मोदी सरकार कैसे दूर हो गई. इस बात से कोई इंकार नहीं किया जा सकता कि ट्रिपल तलाक हटाने से लेकर अयोध्या में राम मंदिर का पुनर्निर्माण और जम्मू कश्मीर से परिच्छेद 370 को खत्म कर वहां शांति बहाली करना मोदी सरकार के लिए बड़ी चुनौती थी लेकिन भाजपा के चाणक्य अमित शाह ने बड़ी कुशलता से रणनीति बनाई और इसमें उन्हें अभूतपूर्व सफलता मिली.

यह भी सच है कि पिछले 11वर्षों से देश में जहां भी चुनाव हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह की राजनीतिक परीक्षा हुई जिसमें उन्होंने अपार सफलता हासिल कर अपने विरोधियों को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि आपकी तानाशाही रवैया और परिवारवाद की राजनीति को जनता ने अब पूरी तरह से ठुकरा दिया है.

(लेखक नवभारत भोपाल के संपादक हैं.)

मालवा- निमाड़ की डायरी

राहुल गांधी के दौरे को उतनी तवज्जो क्यों नहीं?

संजय व्यास

इंदौर के दूषित जल हादसे को लेकर प्रदेश की भाजपा सरकार को घेरने आए लोकसभा नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी को यहां वह रिस्पांस नहीं मिला जिसकी उम्मीद लेकर आए थे. वे मुद्दे को राष्ट्रीय पटल पर उठाना चाहते थे, पर उन्हें वैसा साथ नहीं मिला जैसी कांग्रेस को अपेक्षा थी. प्रदेश सरकार के हादसे के बाद उठाए गए कदम से संतुष्ट नागरिकों ने कोई शिकायत नहीं रखी. स्थानीय कांग्रेस की लचर रणनीति से राहुल गांधी का जनता में आंदोलन पैदा करने की बजाए एक सामान्य दौरा बनकर रह गया. चंद नेताओं को लेकर चलने की नीति भारी पड़ गई. यदि कार्यकर्ताओं से दूरी मिटाकर उनका लवाजमा साथ होता तो बात कुछ और होती व लोगों में भरोसा भी पैदा होता.

स्थानीय नेताओं की नासमझ नीति ने तो राहुल गांधी का खेल बिगाड़ा ही, दूसरी तरफ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का राहुल के दौरे से पूर्व लाशों पर राजनीति का नैरेटिव सेट करना कारगर रहा. मोहन यादव की इस रणनीति का इतना दबाव रहा कि राहुल गांधी को खुद कहना पड़ा कि वे राजनीति करने नहीं, पीड़ा सुनने तथा पीड़ितों की मदद करने आए हैं.

ताई के निशाने पर कौन?

इंदौर शहर की दो ध्रुवीय राजनीति आज भी बरकरार है. समय के साथ इसके खत्म होने का अहसास होने लगा था, दूषित जल हादसे के बाद फिर सतह पर आ गई. ताई की अगुवाई और 2 नंबर में बंटी सियासत पूर्व लोकसभा अध्यक्ष व 8 बार की सांसद सुमित्रा महाजन (ताई) के सक्रिय राजनीति से विश्राम के कारण सुप्तावस्था में चसी गई थी. वे मार्गदर्शक की भूमिका में रही, लेकिन कोई उनके पास सलाह-मशविरा के लिए गया हो, ऐसा नहीं दिखा. जब भागीरथपुरा कांड सामने आया और समर्थन मांगने कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष जीतू पटवारी उनके पास पहुंचे तो ताई की व्यथा फूट पड़ी. नगर की सियासत में हस्तक्षेप से दूर चुप्पी साधे बैठीं ताई ने पटवारी को कांड को उचित मंच पर उठाने के संदेश राहुल गांधी तक पहुंचाने की सलाह दे डाली. स्पष्ट है कि उनका इशारा किनको घेरने के लिए रहा.

चर्चा में प्रहलाद पटेल का आगर दौरा

हाल ही में पंचायत एवं ग्रामीण विकास व श्रम मंत्री प्रहलाद पटेल आगर मालवा जिले के निपानिया बैजनाथ में आयोजित पंचायत पदाधिकारी सम्मेलन में शिरकत करने आए थे. सम्मेलन के दौरान उन्होंने नदियों के संरक्षण, पर्यावरण, युवाओं की भूमिका और भ्रष्टाचार पर खुलकर बात की. साथ ही राजनीति में सच्चाई की आवश्यकता का पाठ भी पढ़ाया. उन्होंने अपनी प्राकृतिक धरोहर नदियों के पुनर्जीवन, संरक्षण के लिए योगदानकी बात कहने के साथ इनके आसपास बन रहे सीमेंट कांक्रीट के जंगल खड़े करने का विरोध भी किया. उन्होंने इस अवसर पर प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी, अटल बिहारी वाजपेयी की नदियां जोड़ो अवधारणा और प्रयास की तारीफ की. करीब आधे घंटे के भाषण में उन्होंने मोदी और अटलजी का नाम कई बार लिया, लेकिन मुख्यमंत्री मोहन यादव का नाम एक बार भी नहीं लिया गया. अब क्षेत्र में यह चर्चा जोर पकड़ रही है कि पटेल ने भाषण में आखिर मुख्य मंत्र का नाम लेने से परहेज क्यों किया.

चुनावी सफलता में देवेंद्र का योगदान

मुख्यमंत्री देवेंद्र फड़णवीस की सफलता के पीछे उनका कठोर परिश्रम, पार्टी को मजबूत करना तथा सहयोगियों पर विश्वास जैसी अनेक बातें हैं. नागरी समस्याओं को पहचान कर उस बारे में बोलने वाली बीजेपी ने शहरी मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए तकनीक का इस्तेमाल किया और नागरी सुविधाओं का जाल बिछाकर विकास को अग्रक्रम देने की अपनी प्रतिबद्धता जताई. महापालिका चुनाव के दौरान फडणवीस ने लगातार विकास के मुद्दों पर जोर दिया. आगामी 3 वर्षों तक महाराष्ट्र में कोई महत्वपूर्ण चुनाव नहीं है. इसलिए मुख्यमंत्री से आशा है कि वह नागरीकरण का प्रभावी नियोजन करें. शीघ्र ही जिला परिषद व पंचायत समिति के चुनाव हैं. उनके नतीजे देवेंद्र के नेतृत्व को और मजबूती दे सकते हैं. विधानसभा में लगातार 3 बार 100 से अधिक बीजेपी विधायक, नगरपरिषदों में 288 में से 128 नगराध्यक्ष तथा 29 महानगरपालिकाओं में से 24 में अपनी पार्टी या युति का महापौर बनने की संभावना फडणवीस की नेतृत्व क्षमता का प्रतीक है. बीजेपी का केंद्रीय नेतृत्व भी मानता है कि देवेंद्र में कुछ विलक्षण खूबी है. महाराष्ट्र की महापालिकाओं के सामने सड़क, पानी, स्वास्थ्य, शिक्षा, कचरे का निपटान जैसी चुनौतियां हैं. इसके साथ ही युवाओं के लिए रोजगार, कानून-व्यवस्था के प्रश्न भी हैं. सुविधाओं को केवल मुंबई, पुणे, ठाणे व नागपुर तक सीमित रखने से काम नहीं चलेगा. अन्य शहरों में भी तत्परता से सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिए. सक्षम कार्यकर्ताओं व नए चेहरों को सत्ता में भागीदारी देनी होगी. नगरपालिका व महापालिका चुनावों में सफलता का महाराष्ट्र की राजनीति पर दीर्घकालीन प्रभाव पड़ेगा. लोकसभा चुनाव में देखी गई बीजेपी की कमजोरी के बाद विधानसभा चुनाव में बीजेपी ने अपनी मजबूती दिखा दी थी.

महाराष्ट्र में नितिन गडकरी व देवेंद्र फडणवीस जैसे कर्मठ नेता बीजेपी की ताकत हैं. विदर्भ के विकास में उनका योगदान साफ नजर आता है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

अमेरिकी दाल पर टैरिफ लगाया भारत ने अपना रंग दिखाया

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, हम ट्रैफिक की समस्या से परेशान हैं जो बेहद अस्त-व्यस्त हो गया है. रास्ता पार करना बहुत रिस्की हो गया है.'

हमने कहा, 'ट्रैफिक को भूल जाइए, टैरिफ की चिंता कीजिए जिसने अमेरिका और भारत के बीच रिश्तों की राह बहुत कठिन कर दी है. प्रधानमंत्री मोदी ने अमेरिकी राष्ट्रपति के पिछले टर्म में अहमदाबाद के स्टेडियम में 'नमस्ते ट्रंप' का भव्य आयोजन करवाया था. दोनों नेता एक-दूसरे के आगोश में थे लेकिन अब ट्रंप के तेवर बदल चुके हैं. दोस्त-दोस्त न रहा, प्यार-प्यार न रहा!'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, ट्रंप ने भारत पर दंडात्मक 50 प्रतिशत टैरिफ लगा दिया, क्योंकि हम रूस से क्रूड आयल खरीद रहे थे. अब भारत ने भी ट्रंप को झटका दिया है और अमेरिका से आने टैरिफ लगा दिया. इसे कहते हैं वाली दाल पर 30 प्रतिशत जैसे को तैसा! अमेरिका की दाल का मतलब है पीली मटर या बटाने की दाल!'

हमने कहा, 'कुछ भी हो, हमारे भारत सामने अमेरिका की दाल नहीं गलने पाएगी. हमारे देशवासी जानते हैं कि अमेरिका की दाल में कुछ काला है. इसलिए हमारी स्वदेशी दाल से हम गुजारा कर लेंगे. अपने यहां दाल को लेकर कितनी ही कहावतें हैं जैसे कि ये मुंह और मसूर की दाल ! छाती पर मूंग दलना! तीन बुलाए तेरह आए, डालो दाल में पानी! भारत में विविध प्रकार की दाल उपलब्ध हैं जैसे कि यूपी में उड़द की दाल ज्यादा खाई जाती है. उसके दहीबड़े भी बनते हैं. महाराष्ट्र में तुवर या अरहर की दाल खाई जाती है. पंजाब में चने की दाल, हिमाचल प्रदेश में राजमा खाया जाता है. गुजरात में दाल-चावल की खिचड़ी पसंद की जाती है. विदर्भ में लाखोड़ी दाल की पैदावार होती है. जब 2 लोगों के विवाद में तीसरा टपक पड़ता है तो कहते हैं- दाल-भात में मूसरचंद !'

पड़ोसी ने कहा, 'दाल में पालक डालकर पकाओ तो दाल भाजी बन जाती है. सभी तरह की दाल मिक्स करके बनाओ और हींग का तड़का दो तो बढ़िया स्वाद आता है. अपने यहां कहा गया है- दाल-रोटी खाओ, प्रभु के गुण गाओ !'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12147

- डॉ. सागर खादीवाला

1		2		3	4	■	5
	■		■	6		7	
8	9		10	■	11		
■	12					■	
13		■	■	14	■	15	■
	■	16	17		■	18	19
20	21			■	22		
23			■	24			■

ऊपर से नीचे
1. मंदिर आदि का शिखर 2. समान होने का भाव, बराबरी 3. तीतर की जाति का एक छोटा पक्षी 4. बेंत की तरह का एक पौधा 5. पहनकर उतारे हुए जीर्ण कपड़े 7. दानशील, दान देने वाला 9. व्यर्थ बोलना, बकवास करना 10. अंग्रेजी वर्ष का पांचवां महीना 13. फैक्ट्री, अधिक मात्रा में वस्तुएं तैयार करने का स्थान 14. पूंछ 15. ईश्वर 16. चीजें खरीदकर बेचने का काम 17. किसी भी तरह की सवारी, विमान 19. उस समय, इस कारण 21. नगीना, संख्या, अदद 22. जिस समय, जिस वक्त

बाएं से दाएं
1. वह कार्यक्रम जिसमें कुछ कवि कविताएं सुनाते हैं 6. दंगा-फसाद, भीषण या विकट दुर्घटना 8. ओस, तुषार (उर्दू) 11. पंक्ति (उर्दू) 12. कातने का काम 13. एक आंख का, एकाक्ष 16 कसरत, बल बढ़ाने के लिए किया जाने वाला शारीरिक परिश्रम 18. बीता हुआ, दशा, अवस्था 20. खाना और पीना, खाने-पीने का ढंग 22. उत्तर, मुकाबले की चीज, नौकरी से हटाने की आज्ञा 23. नगर संबंधी, नगर-निवासियों से संबंध रखने वाला 24. पराया धन अनुचित रूप से हजम करना (उर्दू)

Solution 12146

त	ऊ	■	म	लि	न	मु	ख
स	न	क	ना	■	ष्ट	■	मी
ली	■	र्ज	■	म	■	मु	र
म	सि	■	भा	ल	चं	द्र	■
■	■	च	र	खा	■	क	वि
दु	र्गी	■	वा	न	र	■	ष
ब	■	मा	ह	■	वि	वि	ध
की	ट	■	न	ख	■	भा	र

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में रूके कार्यो की शुरूआत होगी, भूमि भवन आदि का सुख मिलेगा, वर्ष के मध्य में नई योजनाओं पर विचार विमर्श होगा, अधिकारियों के सहयोग से कार्यक्षेत्र में एवं प्रभाव में वृद्धि होगी, वर्ष के अन्त में आर्थिक कमी के कारण योजनायें वाधित होंगी, शिक्षा में अचानक व्यवधान आयेगा, आकस्मिक यात्रा में व्यय होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को भूमि भवन आदि का सुख मिलेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को नई योजनाओं पर विचार विमर्श होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों की शिक्षा में अचानक व्यवधान आ सकता है, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को लाभदायक अवसर प्राप्त होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को यश प्राप्त होगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को निजीदायित्वों की पूर्ति होगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक कोमल तथा नर्म शरीर वाला भावुक निडर, और परिश्रमी होगा. अपनी मनमर्जी का मालिक होगा. विद्या के क्षेत्र में उन्नति होगी.माता पिता को सुखी रखेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

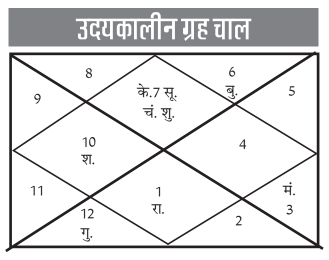

पंचांग

रा.मि. 30 संवत् 2082 माघ शुक्ल द्वितीया भौमवासरे रात 2/16, श्रवण नक्षत्रे दिन 1/12, सिद्धि योगे रात 8/24, बालव करणे सू.उ. 6/40, सू.अ. 5/20, चन्द्रचार मकर रात 1/30 से कुम्भ, पर्व- चन्द्रदर्शन, शु.रा. 10,12,1,4,5,8 अ.रा. 11,2,3,6,7,9 शुभांक- 3,5,9

मेष- उच्च अध्ययन में बेहतर सफलता मिलेगी. मांगलिक यात्रा संभव है. कामकाज के प्रति लगन एवं निष्ठा रहेगी. कार्य बनने का योग है.

वृषभ- विवादों से बचने का प्रयास करें. सहयोगी आपको नीचा दिखाने की कोशिश करेगा. आय एवं व्यय में समानता रहेगी. कार्य की अधिकता रहेगी.

मिथुन- सहूलियत के हिसाब से कार्य योजना में बदलाव कर सकते है. दुविधा से छुटकारा मिलेगा. सुख साधनों में वृद्धि होगी. कामकाज पूरा होगा.

कर्क- जो बात आपको दुखी कर रही है, उसका समाधान मिल जायेगा. राजनैतिक कार्यो में समस्या का समाधान होगा. आकस्मिक लाभ की प्राप्ति होगी.

सिंह- बदलाव की स्थिति मेंसहयोगी नाराज हो सकते हैं. जटिल कार्य मित्रों के सहयोग से पूरे होंगे. भाग्यवर्धक समाचार मिलेगा. स्वास्थ्य संबंधी कष्ट होगा.

कन्या- धीमी शुरूआत के बाद काम में तेजी आयेगी, कारोबारी विस्तार की संभावना है. वाहन मशीनरी आदि कार्यो में सफ्लता मिलेगी. जोखिम के कार्यो को टालें.

तुला- विवाहित वैवाहिक चर्चाओंको लेकर उत्साही रहेंगे. अटका धन बसूल करलेंगे. पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी. व्यापार व्यवसाय अच्छा चलेगा.

वृश्चिक- जो काम सोचकर निकले हैं, उसे पूरा करके ही दम लेंगे. जो लोग उसके प्रभाव से नतमस्तक होंगे. शासन सत्ता का लाभ मिलेगा. विश्वसनीयता बनी रहेगी.

धनु- लेनदेन के मामले आपसी सहमति से सुलझ जायेंगे. संतान पक्ष से सुख सम्मान मिलेगा. महिला जाति की सलाह लेना उपयोगी सिद्ध होगी.

मकर- जिस कार्य को आप हल्के में ले रहे थे, वही आपके लिये परेशानी का कारण बनेगा. वैभव विलासिता की वस्तुओं का संचय होगा. लगन निष्ठा बनी रहेगी.

कुम्भ- सुख सुविधा पर खर्च होगा. अधिकारियों के मेलजोल का लाभ मिलेगा. स्वास्थ्य पर ध्यान दें. किसी निजी कार्य में व्यस्तता रहेगी.

मीन- टकराव छोड़कर कार्य पर ध्यान दें, सफ्लता मिलेगी. फिजूलखर्ची रोकने का प्रयास करें. मित्रों एवं कुटुम्बियों के साथ संबंध अच्छे रहेंगे. परिश्रम की अधिकता रहेगी.

व्यापार भविष्य

माघ शुक्ल द्वितीया को श्रवण नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, तांबा, पीतल, आदि धातुओं में नरमी के बाद तेजी होगी. गुड़ खांड़, शक्कर आदि के भाव में गिरावट आयेगी. जिस वस्तु में 10 बजे के बाद चाल बढ़ेगी, उसी में व्यापार कर लाभ उठायें. भाग्यांक 1599 है.

SUDOKU 7279

	8	1				2	5	
2								9
5			1		7	4		
9	5			4			2	
		3	9		6	7		
	7			8			1	5
		7	2		5			1
6								7
	1	5				6	9	

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7278

5	9	4	2	3	6	1	8	7
8	7	3	1	4	5	2	9	6
6	1	2	8	7	9	3	5	4
1	6	7	9	8	2	4	3	5
3	8	5	4	1	7	6	2	9
2	4	9	6	5	3	7	1	8
7	5	6	3	9	1	8	4	2
4	2	1	5	6	8	9	7	3
9	3	8	7	2	4	5	6	1